मिस्र की ममीज़

जॉयस मिल्टन

चित्र: सुसान स्वान





मिस्र की ममीज़



जॉयस मिल्टन

चित्र: सुसान स्वान





मिस्र में विशाल पिरामिड

रेत से ऊपर उठते हैं.

उन्हें किसने बनवाया?

और क्यों?

पिरामिडों का निर्माण

हज़ारों साल पहले महान राजाओं ने करवाया था.

मिस्र के राजाओं को फिरौन कहा जाता था.

सबसे बड़े पिरामिड को बनाने में

1,00,000 मज़दूरों को बीस साल लगे थे.

लेकिन कोई भी फिरौन

कभी पिरामिड में नहीं रहा.

वह कैसे रह सकता था?

वहाँ कोई खिड़कियाँ नहीं थीं

और कोई दरवाज़े नहीं थे!

ऐसा इसलिए था क्योंकि पिरामिड

एक मकबरा था.

फिरौन की मृत्यु के बाद,

उसके शरीर को पिरामिड

के अंदर रख दिया जाता था.



सभी मिस्रवासियों की तरह,

फिरौन भी मृत्यु के बाद के

जीवन में विश्वास करता था.

उसकी आत्मा मृतकों की भूमि में जीवित रहेगी.

वहाँ का जीवन भी बिल्कुल पृथ्वी पर

जीवन जैसा ही होगा, शायद उससे भी बेहतर!



मृतकों की भूमि में,

फिरौन वो सब कर सकता था जो उसे पसंद था—

घुड़सवारी, शिकार और मछली पकड़ना.

वह भोज और पार्टियाँ भी दे सकता था.



लेकिन मृत्यु के बाद

जीवन का आनंद लेने के लिए,

फिरौन को अभी भी

अपने शरीर की ज़रूरत थी.

इसलिए उसके शरीर को

ममी बना दिया जाता था.

ममी एक ऐसा शरीर होता था

जिसे किशमिश की तरह

सुखाया जाता था.

उससे वो शरीर सड़ेगा नहीं.

राजा खुफू

वह फिरौन था जिसने

सबसे बड़ा पिरामिड बनवाया था.

जिस दिन खुफू की मृत्यु हुई,

उसका परिवार उसके साथ था.

और पुजारी भी साथ थे.





मृत्यु के तुरंत बाद,

एक नाव खुफू के शरीर को

नील नदी के पार ले गई.



वहां अन्य पुजारी राजा के शरीर को

ममी बनाने के लिए इंतज़ार कर रहे थे.



ममी बनाने में शुरू से
अंत तक लगभग सत्तर दिन लगे.
सबसे पहले, अंत्येष्टिकर्ताओं ने
खुफू के शरीर को चीरा.

उन्होंने उसका हृदय अंदर ही छोड़ दिया.
लेकिन उन्होंने शरीर के फेफड़े,
यकृत, आमाशय और आंतें निकाल लीं.
इन अंगों को विशेष बर्तनों में रखा गया,
जिनके ढक्कन जानवरों और देवताओं के आकार के थे.
इन्हें भी ममी के साथ पिरामिड में रखा जाएगा.



उसके बाद, शरीर को नैट्रॉन में पैक किया गया.

नैट्रॉन, नमक जैसा होता था.

नैट्रॉन से कई हफ़्तों के बाद,

खुफू का शरीर पूरी तरह सूख गया.

अब शरीर का वज़न पहले की

तुलना में बहुत कम हो गया था.

त्वचा, चमड़े की तरह,

कठोर और कसी हुई थी.



फिर अंत्येष्टिकर्ताओं ने

बारीक सफेद कपड़े को लंबी पट्टियों में फाड़ा.

उन्होंने पट्टियों को

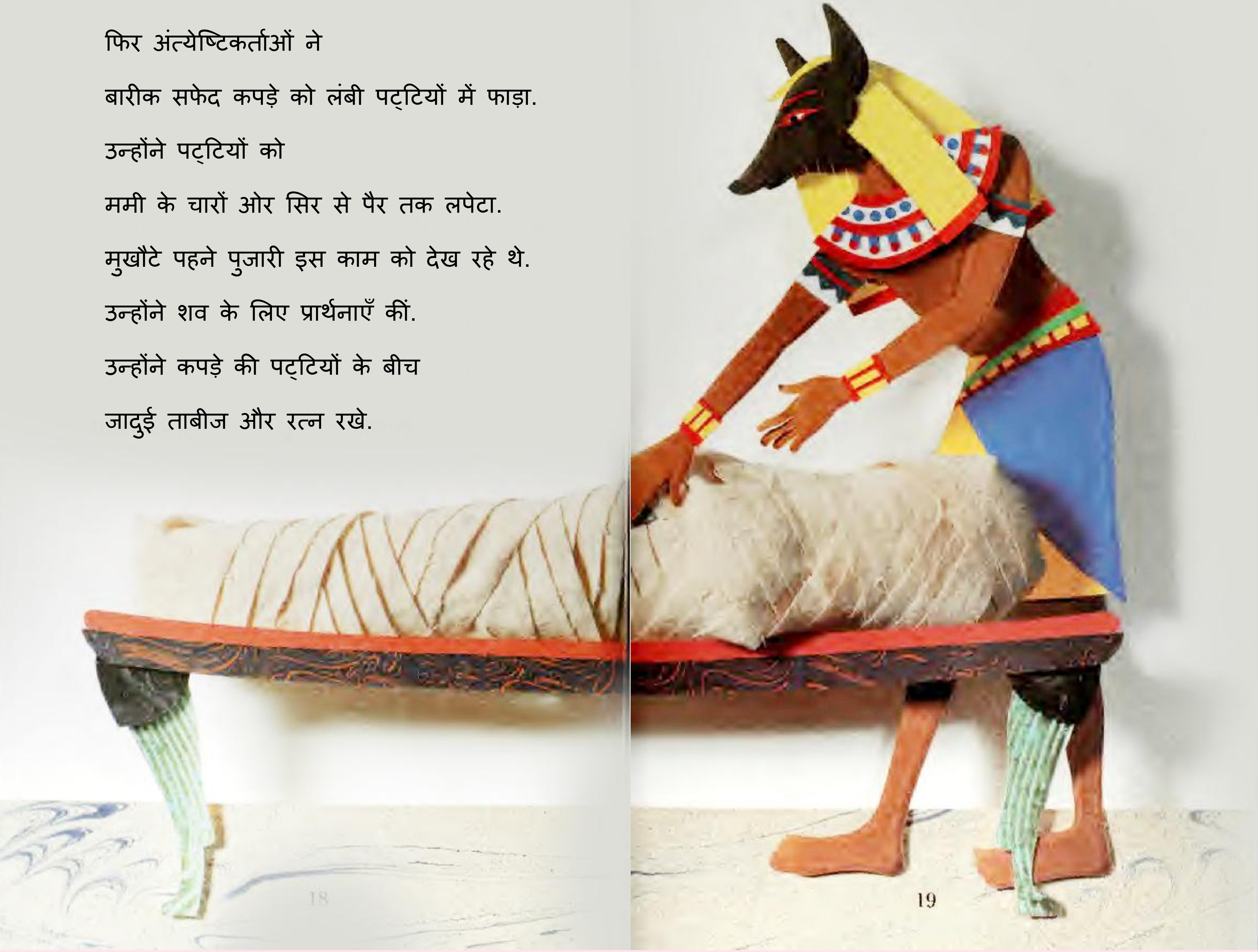
ममी के चारों ओर सिर से पैर तक लपेटा.

मुखौटे पहने पुजारी इस काम को देख रहे थे.

उन्होंने शव के लिए प्रार्थनाएँ कीं.

उन्होंने कपड़े की पट्टियों के बीच

जादुई ताबीज और रत्न रखे.





ममी को पूरी तरह लपेटने के बाद,

अंत्येष्टिकर्ताओं ने उसे

पेड़ों के चिपचिपे रस से ढक दिया.

रस सूख जाने पर,

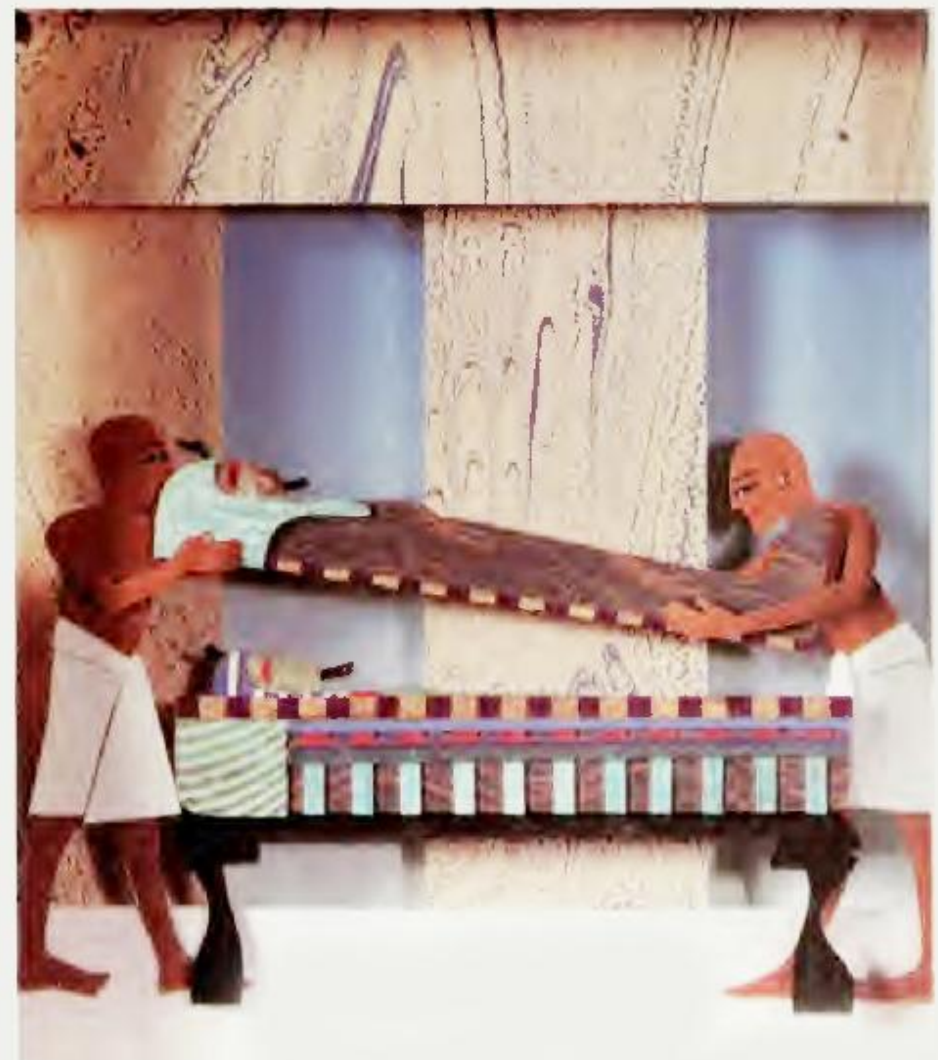
ममी एक मूर्ति की तरह सख्त हो गई.

आखिरकार, खुफू के अंतिम संस्कार का समय आ गया.

उसकी ममी को एक आलीशान ताबूत में रखा गया.

और उस ताबूत को

एक और आलीशान ताबूत में रखा गया.





फिर खुफू की ममी को
एक स्लेज पर रखा गया
और उसके पिरामिड तक घसीटा गया.
इसके बाद एक लंबी परेड हुई.

पुजारियों ने प्रार्थनाएँ कीं.
महिलाओं ने अपने कपड़े फाड़े
और वे ज़ोर-ज़ोर से रोईं.



पिरामिड के अंदर,

एक गलियारा एक

छोटे से कमरे में जाता था.

वहाँ पुजारियों ने

ममी के लिए आखिरी बार प्रार्थना की.

इस प्रार्थना को

"मुख खोलना" कहा जाता था.

अब खुफू फिर से

बोल और खा सकेगा.

पिरामिड के अन्य कमरे

फैशनेबल फर्नीचर

और रत्नों से भरे हुए थे.



ये खजाने खुफू के लिए थे

ताकि वह परलोक में भी

उनका आनंद ले सके.

जब सब कुछ व्यवस्थित हो गया,
उसके बाद गलियारे को
पत्थर के टुकड़ों से बंद कर दिया गया.
मजदूर एक गुप्त रास्ते से
बाहर निकल गए.
फिर उस रास्ते को
पत्थरों और दीवारों से भर दिया गया.
यह सब खुफू की ममी
और उसके खजाने को सुरक्षित
रखने के लिए किया गया था.





कुछ समय बाद, फिरौन ने

पिरामिड बनवाना बंद कर दिए.

इसके बजाय, उन्होंने

गहरी भूमिगत कब्रें बनवाईं.

इन कब्रों में ममीज़

और भी ज़्यादा सजीव दिखती थीं.

अंत्येष्टिकर्ता, ममी की खाल के

नीचे कुछ भरते थे.

जिससे उसके गाल गोल हो जाते थे.

वे काँच या काले-सफ़ेद पत्थरों से

नकली आँखें बनाते थे.

जब ममी बनकर तैयार हो जाती थी,

तो उसके चेहरे पर रंग लगाया जाता था.

कुछ ममियों की नकली भौहें

असली बालों से बनी होती थीं.



शुरुआत में,

केवल राजाओं, रानियों,

और बहुत महत्वपूर्ण लोगों की ही

ममी बनाई जाती थीं.

लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया,

ज़्यादा से ज़्यादा लोग

अपने शरीर को अगली दुनिया के लिए

तैयार करना चाहते थे.

कुछ लोगों ने अपने पालतू जानवरों

की भी ममी बनवाईं.

एक आदमी ने अपनी कब्र में

अपने साथ दो जानवरों को भी रखा –

अपने कुत्ते और अपने पालतू बबून को.



अन्य जानवरों की भी

ममी बनाई गईं

जैसे बैल और साँप

और यहाँ तक कि मगरमच्छों की भी.

ये ममी उन देवी-देवताओं के

सम्मान में बनाई जाती थीं

जो जानवरों जैसे दिखते थे.



देवता थॉथ का सिर एक पक्षी का था.

वह पक्षी आइबिस था.

इसलिए आइबिस की ममी बनाई गईं.





यह देवी बिल्ली जैसी दिखती है.

उनके सम्मान में मंदिर थे

जो हज़ारों बिल्ली ममियों से भरे हुए थे!



यह एक बिल्ली ममी है.



एक बार जब किसी ममी को

दफना दिया जाता था,

फिर उसे सुरक्षित माना जाता था.

लेकिन क्या वह वाकई सुरक्षित थी?

नहीं!



चोर-डाकू कब्रों को लूटना चाहते थे.

वे उनका खजाना चाहते थे.

कुछ लुटेरे ममियों को चुराने भी आते थे.

कई लोगों को लगता था कि

ममियों में जादुई

शक्तियाँ होती थीं.

यात्री उन्हें खोजने के लिए

दूर-दूर से आते थे.



वे ममियों को पीसते थे

और ममी की दवा बेचते थे.

उन्हें लगता था कि ममी का पाउडर

खाने से लोग ताकतवर बन जाएँगे.

लेकिन, उससे वे अक्सर बीमार पड़ जाते थे!



कुछ यात्री ममियों को
अपने साथ घर ले आते थे.
वे ममियों को खोलते थे
ताकि देख सकें कि वे कैसी दिखती थीं.
उन्होंने उन लोगों को टिकट भी बेचते थे
जो ममियों को देखना चाहते थे.





आज, वैज्ञानिक ममियों का अध्ययन करते हैं.

वे उनके बारे में जितना हो सके,

उतना जानना चाहते हैं.

यह ममी बोस्टन के एक

अस्पताल में रखी है.

इसका नाम “पाडीहेरशेफ” है.

लेकिन वैज्ञानिक इसे बस "पाडी" कहते हैं.

वैज्ञानिकों को ममियों का

अध्ययन करने के लिए

अब उन्हें खोलने की भी ज़रूरत नहीं होती है.

वे एक्स-रे का उपयोग कर सकते हैं.

एक्स-रे से पता चल सकता है कि

लोगों को बहुत पहले कौन-कौन

सी बीमारियाँ थीं.

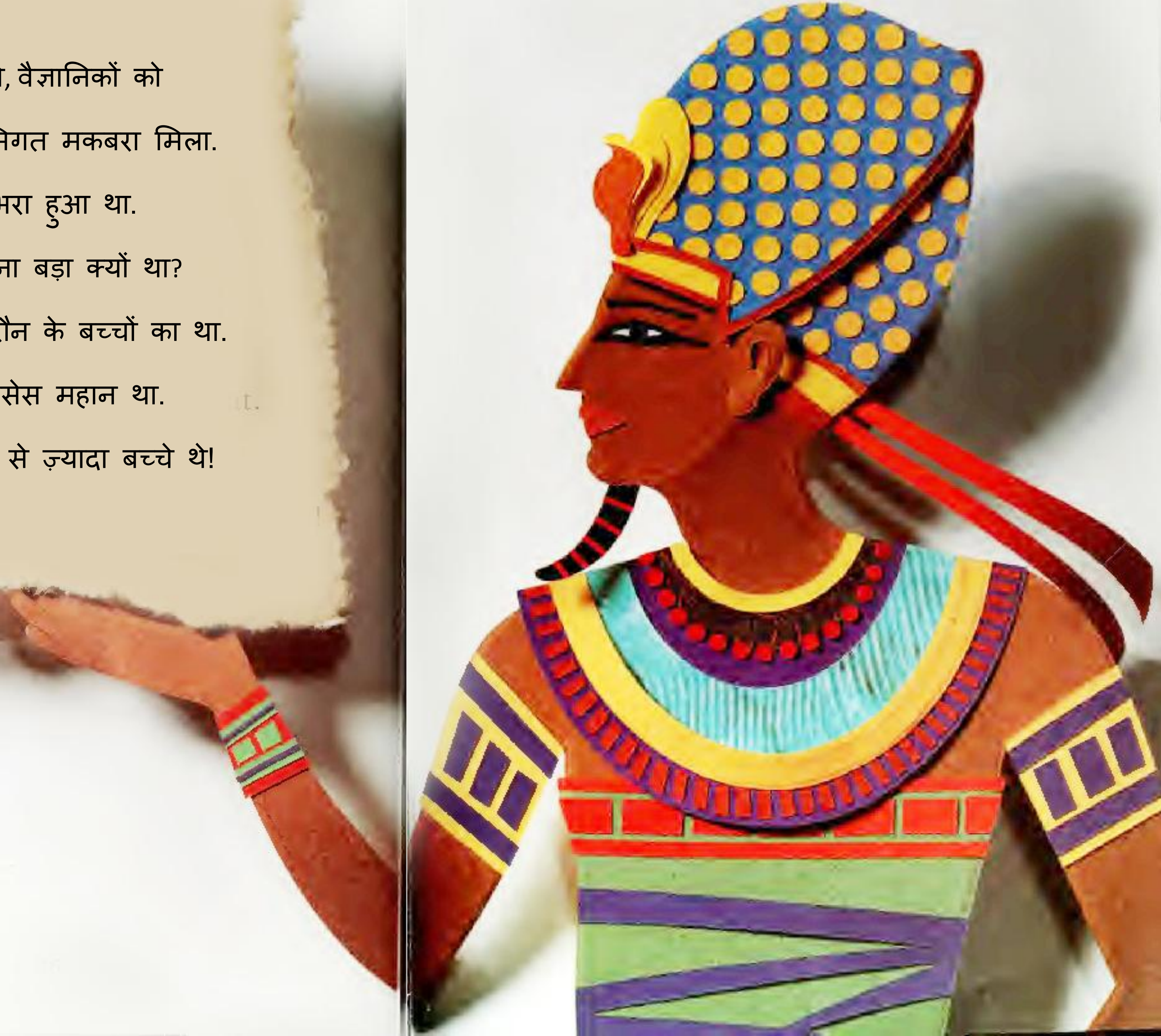


वैज्ञानिक और खोजकर्ता सैकड़ों सालों से
ममियों की खोज कर रहे हैं.
बहुत सारी ममीज़ मिल चुकी हैं.
क्या अभी और कुछ बची हैं?





कुछ समय पहले, वैज्ञानिकों को
एक विशाल भूमिगत मकबरा मिला.
वह ममियों से भरा हुआ था.
वह मकबरा इतना बड़ा क्यों था?
वह मकबरा फिरौन के बच्चों का था.
उसका नाम रामेसेस महान था.
रामेसेस के 100 से ज़्यादा बच्चे थे!





कौन जाने?

चट्टानों और रेत के नीचे,

और भी ममीज़ धंसी हो सकती हैं

जो खोजे जाने का इंतज़ार कर रही हों!

ममीज़

क्या आप जानते हैं कि कुछ ममियों में

काँच की आँखें और विग होते हैं?

और यह कि बिल्लियों की ममीज़ भी होती हैं

और पक्षियों की ममीज़ भी?

और यह कि कुछ लोग

पिसी हुई ममी को खाते थे?

इस किताब में ममी के बारे में

बहुत सारे अद्भुत तथ्य दिए हैं!